जय नानेश
जय महावीर
जय रामेश
राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक

आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक

(10 व 25 अक्टूबर 2000)

संयुक्तांक

सम्पादक मंडल

चम्पालाल डागा
भूपराज जैन
जानकीनारायण श्रीमाली
उदय नागोरी

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर 334005

श्रमणोपासक
आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक

लोकार्पण
आसोज शुक्ला द्वितीया
संवत् 2057, शुक्रवार, 29 सितम्बर सन् 2000 ई

प्रतिया 8200

मूल्य एक सौ रुपये

प्रकाशक श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर 334005
फोन 544867/203150, फैक्स 0151-203150

मुद्रक
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर फोन 547073

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखको के विचारो से सम्पादक या सघ की सहमति हो।

समर्पण

समता साधक, समीक्षण ध्यान-योगी

धर्मपाल प्रतिबोधक, चारित्र चूड़ामणि

स्व. आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा.

की

चिर स्मृति मे प्रकाशित

यह अशेष प्रणति

परम श्रद्धेय

व्यसन मुक्ति के प्रेरक

प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ

तरुण-तपस्वी

जप-तप और नियम पालन

के पावन त्रिवेणी संगम

स्व-पर कल्याण

हेतु संकल्पित

नानेश शासन के पट्टधर अभिनव भगीरथ

आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को

सादर, सवन्दन
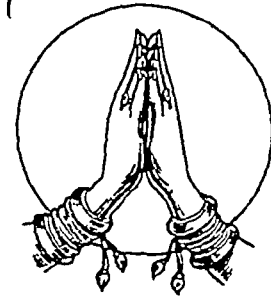
क त
से
तप
भावो
जिन
जगाया
अत
प्रति
इस
देश भर
से
हेतु
को
सघ ने
प्रतिमा,
है। हम
इस
देशभर के

प्रकाशकीय

कार्तिक कृष्णा ३ सवत् २०५६ को समता विभूति, आचार्य श्री नानेश ने इस नश्वर ससार से महाप्रयाण किया, किन्तु उनका अशेष यश समाज, राष्ट्र तथा विश्व को उनके त्याग तथा तप-पूर्ण पावन सन्देशों की धरोहर रूप धरती तल पर जन-जन के मन मे गुण-पूजा के पावन भावो के रूप मे आज भी विद्यमान है ।

जिन शासन प्रद्योतक आचार्य-प्रवर श्री नानेश ने लक्ष-लक्ष मानवो के हृदय में समता का भाव जगाया और प्राणिमात्र को संस्कारित करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया ।

अत· उनके महाप्रयाण पर श्री अ. भा साधुमार्गी जैन सघ ने उनकी इस पावन धरोहर के प्रति जनमानस में उमड़ रहे श्रद्धा के स्वरो को श्रमणोपासक के आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक के रूप में नियोजित और आकार प्रदान करने का निश्चय किया ।

इस निश्चय की क्रियान्विति हेतु श्री सघ की कार्य समिति और मत्री परिषद् व सम्पादक ने देश भर के प्रमुख विद्वानों और संघ निष्ठजनों तथा स्व आचार्य श्री नानेश के पावन व्यक्तित्व से प्रभावित समाज और राष्ट्र के प्रमुखो से अपने आलेख, सस्मरण और सन्देश प्रेषित करने हेतु आह्वान किया। हमें हर्ष है कि सुधीजनो ने प्रभूत मात्रा मे सामग्री भेजकर सघ के आह्वान को सार्थक किया । हम समस्त आलेख प्रदाताओ के प्रति हृदय से आभारी है ।

सघ ने इस महनीय कार्य सम्पादन हेतु श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालालजी डागा और सहयोगियो का एक सम्पादक मडल गठित किया। हमें हर्ष है कि सम्पादक मंडल ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और कर्मठ समर्पणा से इस विशेषाक को वर्तमान स्वरूप मे प्रस्तुत किया है । हम सम्पादक मडल के प्रति आत्मिक आभार प्रकट करते है ।

इस विशाल विशेषाक के प्रकाशन हेतु सघ ने विज्ञापनो के संकलन का निश्चय किया । देशभर के श्री सघो और संघ प्रमुखों ने उदात्त भाव से विज्ञापन के माध्यम से अर्थ सहयोग

प्रदान किया। सघनिष्ठ महानुभावो की एक पूरी ऐसी श्रेणी इस अभियान में उभरकर आई, जिसने अर्थ सकलन के क्षेत्र में सचमुच अपूर्व भूमिका निभाई। (इन प्रमुखो की सूची इसी अक मे अन्यत्र सादर प्रकाशित है) हम ऐसे सभी अर्थ सहयोगी, सघ प्रमुखो, श्री सघो और विज्ञापनदाताओ के प्रति हृदय से आभारी है।

स्व आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषाक मे स्तरीय और सामयिक प्रकाशन कर स्वय सघ के प्रमोद भाव को भी हम अनुभव करते है तथा उन सभी सहयोगियो के प्रति पुन हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

सादर

शांतिलाल सांड
अध्यक्ष

सागरमल चपलोत
महामंत्री

जयचन्दलाल सुखानी
कोषाध्यक्ष

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर

सम्पादकीय

मानवता के भाल तिलक

समुन्नत ललाट, प्रलम्ब बाहु, प्रशस्त वक्ष, सुलोचन, तप-तेज मडित मुखमडल, धौत धवल खद्दर से आवेष्टित श्यामल सुकोमल, सुपुष्ट देह यष्टि आदि शारीरिक श्री से समृद्ध परम् श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म सा का समग्र जीवन समत्व साधना, समीक्षण ध्यान एव कथनी-करनी की एक्यता की ऐसी उदग्र ज्योतित मशाल है जिसकी अन्य कोई मिसाल दृष्टिगत नही होती।

जैनागमो मे आचार्य के लक्षणो एवं गुणो का वर्णन करते हुए कहा गया है-

स समय पर समय बिउ गंभीरो दित्तियं सिवो सोमो,

गुणसय कलि ओ जुत्तो पवयण सारं परिकहेऊं।

अर्थात् आचार्य स्व पर सिद्धान्त का ज्ञाता, शत-सहस्त्र गुणो से युक्त, तीर्थकर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो पर आचरण कर प्रचार-प्रसार करने वाला गभीर आभायुक्त, सौम्य एव कल्याणकारी व्यक्ति होता है।

शास्त्रकार कहते है कि आचार्य उस दीपक के समान होता है, जो दीपक की तरह स्वय प्रकाशमान रहकर दूसरो को आलोकित करता है।

जह दीवा दीव सयं पइप्पए सोय दिप्पए दीवो।

दीव समा आयरिया दिप्पति परं च दीवेंति ॥

एक दीप स्वयं जलकर असख्य दीपकों को जलाता है। वह स्वयं प्रकाशित होता है एव अनेक भविक जीवो को अज्ञानाधकार से निकालकर अपने ज्ञानालोक से दैदीप्यमान बनाता है।

श्रद्धेय आचार्य-प्रवर का सम्पूर्ण जीवन इस कसौटी पर नितान्त खरा उतरा है यह सर्वथा निर्विवाद एव निसंदिग्ध है। जैसे सोना तेजाब के योग से आग में तपकर विशुद्ध स्वर्ण हो जाता है वैसे ही हमारे परमाराध्य का जीवन भी तपाराधना एवं संयम-साधना की अग्नि मे

तपकर सौटच का विशुद्ध स्वर्ण बना है।

कंचणस्स जहा धाऊ जोगेणं मुच्चए मलं,

अणाइए वि संताणे तवाओ कम्म संकरं।

पच महाव्रतों से उत्तुग, स्व-पर कल्याण की साधना मे अहर्निश निरत, धीर-वीर गभीर आचार्य श्री के सान्निध्य, दर्शन एव स्मरण मात्र ने असख्य प्राणियो का कल्याण किया है, व्यसन मुक्त अहिंसक जीवनयापन के लिए प्रेरित किया है। समता समीक्षण की अमृतोपम वर्षा से शान्त, दान्त और निर्मल बनाया है।

मनुष्यता से रहित व्यक्ति मनुष्य कैसे कहला सकता है, जो आदमी आदमी के काम नही आये, वह तो पशुवत है। करुणा रहित मनुष्य तो जड़ होता है। चचेरे भाई देवव्रत के बाण से बिद्ध, घायल हस को उठाकर अपनी गोद में रखकर सिद्धार्थ अपने करुण अश्रुजल के लेपन से आश्वस्त कर जीवन प्रदान करते हैं एव करुणा की कुकुम रोली से मानवता का अभिषेक करते है।

स्थडिल से लौटते मुनि नानालाल कंटीली झाडियो में फंसे रक्त स्नात मेमने की चीत्कार सुनकर उसे निकालकर अपने करुण दृष्टि निक्षेप से आश्वस्ति प्रदान करते है, मृत्प्राय मे प्राणो का संचार करते है। उनका यह अम्लान एव अग्लान सेवाभाव ही मानवता का चरम उत्कर्ष है, उन्हे भगवत्ता के चरम पद पर प्रतिष्ठित करता है।

प्रभु महावीर से गौतम ने पूछा कि भगवन् आपकी पूजा, उपासना एव गुण-कीर्तन करने वाला श्रेष्ठ एव महान् है अथवा असहाय, पीड़ित तथा रोगग्रस्त व्यक्ति की शुश्रुषा करने वाला व्यक्ति। तो उन्होने स्पष्ट कहा है-

"जे गिलाणं पड़ियरई से धन्ने"

जो दीन-दु खी, निर्बल, असहाय एव सतप्त व्यक्ति की परिचर्या, सेवा करता है, उसके दु ख दर्द को मिटाता है, वह निश्चित ही धन्य है, महान् है, श्रेष्ठ है।

कहना न होगा कि श्रद्धेय आचार्यवर में बालवय से ही सेवा, सहायता एव करुणा का यह निर्झर प्रवहमान था। सेवा का यह मूर्तिमंत स्वरूप ही मानवता का चरम उत्कर्ष है, जो उन्हें प्रणम्य, पूज्य और वंद्य बनाता है। यह सेवा ही इबादत और पूजा है। एक मशहूर शायर का यह शेर भी यही रेखाकित करता है-

यही है इबादत, यही है दीनों इमां।

कि काम आये दुनियां में इंसा के इंसा॥

वह मनुष्य ही क्या जो मनुष्य के काम नही आता। वह पत्थर दिल है, जो व्यथित को देखकर न पसीजे। कहा है-

वह आदमी ही क्या है, जो दर्द का आशना न हो।

पत्थर से कम है, दिल शरर गर निहा नहीं।

यदि कोई दु.खी दिल को सान्तवना न दे सके, आहत को देखकर पिघल न जाये एवं करुणावारि से प्लावित न करे तो उसे कैसे इन्सान कहा जा सकता है। यदि मनुष्य के घाव को करुणा जल से धोकर, मरहम पट्टी कर प्रोत्साहित न कर सके तो वह मनुष्य कहलाने लायक कहां है और उसके सारे सिद्धान्त, इमानोंकरम एव पूजा उपासना भी व्यर्थ है।

इमां गलत उसूल गलत इद्दुआ गलत।

इंसा की दिल दिही गर इंसा न कर सके॥

श्रद्धेय आचार्यवर की समता-वारि मे स्नान कर अनेक भव्यजनो ने अपूर्व शांति एव सौख्य की अनुभूति की है, अनेक आपादमस्तक उपकृत हुए हैं।

स्व-पर उपकारी, समत्वधारी, तत्त्वज्ञानी, परदु:खकातर आचार्यवर की अशेष स्मृति में श्रमणोपासक का स्मृति विशेषाक प्रकाशित करने का निश्चय किया ताकि लक्ष-लक्ष जनो के हृदयहार परमाराध्य स्व आचार्य प्रवर के प्रति अपनी मनोगत भावनाओं को प्रकट कर सके। इस घोषणा का सर्वत्र स्वागत हुआ एवं कुछ दिनो में ही भारतभर से स्व आचार्य श्री के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप आलेख एव रचनाएं प्राप्त होने लगी।

प्राप्त सभी रचनाओ को सुविधा की दृष्टि से हमने चार खंडो मे वर्गीकृत किया है।

जीवन-ज्योति

प्रथम खड जीवन-ज्योति है। उसमें आचार्य श्री के संक्षिप्त जीवन एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओ का समावेश किया गया है। आचार्य श्री से संबधित सभी सामग्री जैसे मुनि जीवन से पूर्व, अणगार धर्म अंगीकार करने एवं आचार्य पदारोहण करने के पश्चात् चातुर्मास स्थल, दीक्षित साधु-साध्वी, चातुर्मासिक उपलब्धियां, रचित साहित्य, उद्घोषित नियम, बुद्धिजीवियों एवं अन्य लोगों से भेट आदि का सकलन किया है। प्रारम्भ में आचार्य श्री के जीवन पर विहगम दृष्टि मुद्रित है। जन्म स्थान, दीक्षा स्थान जहा संपादक मंडल के सदस्यो ने यात्रा की एव संबधित व्यक्तियो से साक्षात्कार किया, उसका वर्णन भी प्रकाशित किया है।

व्यक्तित्व वन्दन :

द्वितीय खड व्यक्तित्व वन्दन है। उसमें आचार्य श्री के व्यक्तित्व एव कृतित्व से सबंधित आलेख है। आचार्य श्री के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं बहुआयामी प्रतिभा पर इन आलेखो मे प्रकाश डाला गया है। आचार्य श्री के वैज्ञानिक, साहित्यिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं अन्य पक्षो पर रचनाकारों ने अपनी-अपनी दृष्टि से विचार किया एवं अपनी श्रद्धा निवेदित की है।

चिन्तन-मनन :

तृतीय खण्ड चिन्तन मनन है। इसमें जैन धर्म, दर्शन एवं साहित्य से सबंधित कुछ आलेखो के साथ आचार्य श्री के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालने वाले आलेख सम्मिलित किये गये है।

वन्दना के स्वर :

चतुर्थ खण्ड वन्दना के स्वर हैं । इसमे श्रद्धेय आचार्य प्रवर के गुणानुवाद करते हुए श्रद्धांजलियों का प्रकाशन किया है, उसके चार उपखड है । प्रथम उपखड में राजनेताओ के सन्देश हैं । द्वितीय उपखंड में पूज्य मुनिराजों एव महासतीवर्याओं की श्रद्धाजलिया सकलित हैं । प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं के वन्दना के स्वरो का नियोजन तृतीय उपखड मे एव चतुर्थ उपखड में विभिन्न सघों द्वारा अर्जित श्रद्धाजलिया सकलित है । पद्यमय श्रद्धाजलियां भी यथास्थान नियोजित की गई है । अन्तिम खड विज्ञापन का है । अर्थ सहयोग के बिना इस विशालकाय विशेषांक का प्रकाशन कठिन हो जाता । कहा जाता है, 'उदारचरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्' । यही दृष्टि इसमें महत्त्वपूर्ण है एव यह खड इसी उक्ति को सार्थक करता है ।

इस विशेषाक के प्राथमिक नियोजन मे श्री सदीप जैन 'मित्र' दुर्ग की भूमिका को नगण्य नही किया जा सकता । उनका श्रम निश्चित ही रेखाकित करने योग्य है ।

विशेषांक की विशद् सामग्री के सपादन मे पर्याप्त सावधानी एव सजगता के बाद भी त्रुटिया असभाव्य नहीं हैं । यथासाध्य सम्पूर्ण सामग्री को सम्मिलित किया है फिर भी कोई सामग्री छूट गई हो तो परिशिष्टांक मे सम्मिलित की जा सकेगी ।

किसी भी वृहद् एवं महत्त्वपूर्ण कार्य की सफलता अनेक के सहयोग मार्गदर्शन एवं प्रेरणा पर निर्भर करती है । इसके प्रकाशन मे प्रारम्भ से ही सघ प्राण श्री सरदारमलजी काकरिया की विशेष रुचि रही है । किसी भी रचनात्मक एव सेवाकार्य में उनका सहयोग सदैव असंदिग्ध रहा है । संघ अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सांड की अव्याहत प्रेरणा, उत्साह और उमग ने इस रूप में इसका प्रकाशन सभव किया है । उनके प्रति कृतज्ञता छोटे मुह बडी बात भले ही हो पर अनिवार्य तो है ही ।

इसी तरह श्री केशरीचंद जी गोलछा की प्रेरणा, उत्साह एवं श्रद्धा इस विशेषांक के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण रही है । अस्वस्थ होते हुए भी कभी फोन एव कभी नोखा से स्वयं आकर इसका निरन्तर लेखा-जोखा लेते रहे । इनकी पुष्कल प्रेरणा हेतु अनेकश आभार । श्री जयचदलाल जी सुखानी द्वारा समय-समय पर इसकी प्रगति का मूल्यांकन हमारा मार्गदर्शन एव प्रेरणा स्रोत रहा है । हम भूयसी आभारी है उनके ।

विशेषाक के स्वरूप निर्धारण में सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी डा. आदर्श सक्सेना की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है । उनका मार्गदर्शन हमारा पाथेय बना एतदर्थ हार्दिक आभार ।

श्री कन्हैयालाल जी भूरा ने भी इसके प्रकाशन मे पर्याप्त रुचि ली एव शीघ्र प्रकाशन हेतु प्रेरित किया एतदर्थ साधुवाद ।

पूज्य संत मुनिराजो एव महासतियों के प्रति आभार हमारा सहज स्वाभाविक कर्त्तव्य है । विद्वान लेखको एवं रचनाकारो के हम अत्यन्त आभारी है जिनकी रचनाओ ने इसे समृद्ध किया है ।

नाति दीर्घ समय मे इसका प्रकाशन कदापि सभव नहीं होता यदि अमित कम्प्यूटर्स के श्री अमिताभ एव श्री प्रमोद नागोरी इसके लिए आगे आकर उत्तरदायित्व ग्रहण नही करते । उनका अथक परिश्रम निश्चित ही अभिनन्दनीय है । उनका सुनहरा भविष्य असदिग्ध है ।

कार्यालय के सहयोगियों के श्रम की अनदेखी कृतघ्नता ही होगी अत· उनके प्रति सहज आदराभिव्यक्ति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है । ज्ञात-अज्ञात प्रेरक सहयोगी बन्धुओं के प्रति आभार प्रकट करना हम अपना सहज कर्त्तव्य मानते हैं ।

बात समाप्त करने से पूर्व यह कहना आवश्यक है कि श्रद्धेय आचार्य प्रवर भीतर बाहर एव बाहर भीतर से एक थे । स्फटिक की तरह निर्मल एवं पारदर्शी । कुछ भी गुह्य नही । न दुराव न छिपाव ।

'जहा अन्तो तहा बाहि जहा बाहि तहा अन्तो'

वह समत्व साधक आजीवन समता समाज की रचना में लीन रहा यदि हम उनके अनुयायी उस समता समाज की रचना में आगे बढ सके तो हमारी यह श्रद्धांजलि प्रणम्य होगी । कई बार दीपक तले अंधेरा रह जाता है । हम इस उक्ति को झुठलायेंगे एवं सर्वत्र प्रकाश फैलायेगे, ऐसी हमारी कामना है ।

प्रयत्न एव परिश्रम की बड़ी महिमा है । प्रार्थना भी महत्त्वपूर्ण है । हमारा प्रयत्न, परिश्रम एवं प्रार्थना कितनी सार्थक है, यह तो सुधी पाठकों पर निर्भर है । जो अच्छा है, वह आपका है, त्रुटियों के लिए हम उत्तरदायी हैं । किमधिकम् ।

इस विशेषांक के सम्पादन क्रम में देशभर से प्राप्त श्रद्धा के स्वरों में सर्वत्र यह प्रतिध्वनित हुआ है कि स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे वर्तमान शासन नायक आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के रूप मे चतुर्विध सघ को एक अनमोल भेंट दी है । इस उदात्त भावपूर्ण स्वर मे अपना स्वर मिलाते हुए हमे यह लिखते हुए गौरवमय हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, परम् श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा की नेश्राय में यह सघ और शासन नई ऊचाइयॉ प्राप्त करेगा ।

पूज्य पाद आचार्य अमितगति का यह श्लोक जिसे आचार्य भगवन् कई बार सुनाते थे, उसी से हम अपनी बात को विराम दे रहे है ·

सत्वेषु मैत्री गुणीषु प्रमोदं,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं ।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ।

स्व. आचार्य प्रवर को हमारी अशेष प्रणति एव भूयसी श्रद्धांजलि ।

चम्पालाल डागा   भूपराज जैन
जानकीनारायण श्रीमाली   उदय नागोरी